International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 10-12-2020; Accepted: 25-12-2020; Published: 23-01-2021
www.educationjournal.in
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 30-34

डां. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ में अध्ययनरत् बधिर बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन का केस अध्ययन।

डां. राजेन्द्र पाल[1], श्रीमती सुनीता[2]

[1] आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज मैंनेजमेंट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजीए बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] एम0एड0, छात्रा, विशेष शिक्षा संकाय, श्रवण बाधितार्थ, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

संवेग व्यक्ति में आन्तरिक भावों में अचानक तीव्र होने तथा विवेक प्रक्रिया के नियंत्रण से मुक्त व्यवहार के परिलक्षित होने की स्थिति को अभिव्यक्त करते है। संवेगों की मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। संवेगों की प्रकृति भावात्मक होती है व्यक्ति को अधिक उत्तेजना प्रदान करते है संवेगों को व्यक्ति की मुख–मुद्रा, वाणी तथा अन्य व्यवहार के अवलोकन से पहचाना जा सकता है। संवेग व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन की दशा है जिसके द्वारा वह स्वयं को परिस्थितियों के आधार पर समायोजित करने का प्रयास करता है। केस अध्ययन की सहायता से उपचारात्मक शिक्षण वैयक्तिक परामर्श एवं मानसिक विकारों का चिकित्सा आदि में समस्याओं का समाधान किया जाता है। इसकी सहायता से मन्दबुद्धि, तीव्रबुद्धि, सृजनात्मक व पिछडे. एवं मानसिक रोगों से ग्रस्त आदि सभी प्रकार के विद्यार्थियों के विषय में अध्ययन हेतु उपयोगी है।

बधिर बालिकाओं में जिज्ञासा का भाव व प्रेम का भाव होना, अपने शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति न होने पर हीनभावना, थकान की अनुभूति का भाव एवं आत्मग्लानि भाव महसूश करना, विषम परिस्थितियों में स्वयं के आत्माभिमान के साथ किसी प्रकार का समझौता न करना आदि संवेगों की उपस्थिति पाई गयी साथ ही उनमें सहभागिता के साथ भोजन करने की खुशी का भाव एवं भूख की अनुभूति होने पर भोजन को खोजने में शीघ्रता न करना, शैक्षिक कार्यों में सहपाठियों से सहायता लेना, एवं सहपाठियों के साथ शैक्षिक क्रिया–कलाप अथवा कार्यक्रम को समन्वय करने में कठिनाई की अनुभूति करना, कार्य करने की नवीन विधि से करने में खुशी का भाव एवं शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की श्रेष्ठ उपलब्धि पर खुशी का होना, एवं दूसरों की परेशानी को देखकर भावुक होना आदि संवेग या भाव देखने को मिले, इससे स्पष्ट है कि उनके संवेगात्मक समायोजन में सकारात्मक परिवर्तन होता प्रतीत होता है।

बधिर बालिकाओं ने दूसरों से सहायता लेने पर भय, संकोच एवं नवीन कार्यों को करने में कठिनाई, दूसरों के द्वारा अपेक्षित व्यवहार न होने पर असहजता का भाव, सहपाठियों द्वारा उपेक्षित व्यवहार करने पर क्रोध का भाव एवं नवीन सहपाठियों से घुलने–मिलने में भी असहजता का भाव, शैक्षिक प्रतिस्पर्धाओं में ईर्श्या का भाव करना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग की अपेक्षा एकांकीपन में रहना आदि नकारात्मक संवेगों की अनुभूति पायी गयी जिससे उनका संवेगात्मक समायोजन में नकारात्मक प्रभाव प्रतीत होता है। बधिर बालिकाओं को शिक्षित कर उन्हें संवेगों से उभरने के लिए न केवल जागरूक करना चाहिए बल्कि ऐसी बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन नकारात्मक रूप बचने के लिए सामान्य विद्यालयों में विशेष शिक्षकों की सहायता से उनके लिए सुगम शैक्षिक वातावरण बनाना चाहिए और उनके व्यवसायिक पुनर्वास हेतु उचित वातावरण भी तैयार करना चाहिये।

मुख्य शब्दः आत्माभिमान, बधिर बालिकाओं के संवेगात्मक, उपचारात्मक शिक्षण वैयक्तिक परामर्श

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में समय–समय पर क्रोध, भय, हर्ष, घृणा, प्रेम, वासना, क्षोभ आदि भावों का अनुभव करता है। संवेगों का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन के भावात्मक पक्ष से है। जन्म लेने के उपरान्त मृत्यु तक की सम्पूर्ण अवधि में व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर वातावरण के साथ अपने समायोजन के लिये निरन्तर प्रयासरत् रहता है। वहीं दूसरी ओर संवेगों के वशीभूत होकर कभी–कभी वह निन्दनीय व्यवहार कर जाता है। क्रोध में व्यक्ति माता–पिता अथवा अध्यापकों अथवा वृद्धजनों के साथ अभद्र व्यवहार कर जाता है।

बधिर बालिकाओं के प्रति उनके अभिभावक बहुत ज्यादा सकारात्मक नहीं है। इस कारण बधिर बालिकाओं में संवेगात्मक समायोजन नहीं हो पाता है जिससे उनमें किसी विशेष क्षेत्र में निपुणता व अन्तःशक्ति कहीं न कहीं प्रभावित होती नजर आती हैं। केस अध्ययन की सहायता से उपचारात्मक शिक्षण वैयक्तिक परामर्श एवं मानसिक विकारों का चिकित्सा आदि में समस्याओं का समाधान किया जाता है। इसकी सहायता से मन्दबुद्धि, तीव्रबुद्धि, सृजनात्मक व पिछडे. एवं मानसिक रोगों से ग्रस्त आदि सभी प्रकार के विद्यार्थियों के विषय में अध्ययन हेतु उपयोगी है। इसके अन्तर्गत विभिन्न स्रोतों से तथा व्यापक ढंग से सूचनायें संकलित की जाती है इन सभी दृष्टिकोण से यह विधि उपयोगी है।

व्यक्ति अध्ययन अथवा केस अध्ययन किसी व्यक्ति विशेष के विषय में गहन अध्ययन है। यह अनुसंधान करने योग्य समस्याओं हेतु एक विस्तृत क्षेत्र प्रदान करता है। और अध्ययन हेतु एक उपयुक्त विधि द्वारा अनुसंधान करने का एक उपयुक्त मार्ग प्रशस्त करता है। व्यक्ति अध्ययन में अनुसंधान के प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं होता बल्कि समस्या प्रश्नों के उत्तर हेतु परिकल्पना को निर्माण किया जा सके और सार्थक परिणाम प्राप्त किया जा सके।

शोध के उद्देश्य

1. बधिर बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
2. बधिर बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन से प्रकाशित सामाजिक जीवन का अध्ययन करना।
3. संवेगों के सापेक्ष बधिर बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन का पदानुगत अध्ययन करना।

सामाजिक संवेगात्मक समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव में सार्थक सह–सम्बन्ध पाया गया (बिलाल शोकीन 2015, महमूद खालिद एवं इकबा, 2015)। श्रवण बाधित बच्चों के सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर देखने को मिले (पॉल एवं जीन 2006, अलपिन 2006) नूरीन व अन्य–2016। सामान्य बच्चों एवं बधिर बच्चों के ग्रह समायोजन में बधिर बच्चों को अधिक परेशानी होती है। (जेन्नीकर, 2007) भगत पूजा–2016 एवं बिन्दु व मैथ्यू–2019 आदि। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक संवेगात्मक समायोजन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शोध की प्रकृति पर आधारित वर्णनात्मक अनुसन्धान का उपयोग किया गया है। डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ में अध्ययनरत बधिर बालिकाओं को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है जिनमें से 25 बधिर बालिकाओं को सोद्देश्य न्यायदर्श विधि से अध्ययन हेतु चयनित किया गया है। स्वनिर्मित संवेगात्मक समायोजन मापन प्रश्नावली का उपयोग किया है। सांख्यिकीय विधियों में प्रतिशत, मध्यमान एवं मानक विचलन की सहायता से आंकडों का विश्लेषण एवं निर्वचन किया गया है।

सारणी संख्या 1: बधिर बालिकाओं द्वारा प्रदत्त संवेगात्मक समायोजन के आयामों की स्थिति का विवरण

क्र0 सं0	आयाम	हाँ		नहीं	
		प्रति उत्तर आवृत्ति	प्रतिशत	प्रति उत्तर आवृत्ति	प्रतिशत
1.	भय (Fear)	25	100	00	00:
2.	क्रोध (Anger)	23	92	02	8:
3.	घृणा (Digust)	21	84	04	16:
4.	वात्सल्य (Tendernè)	21	84	04	16:
5.	करूणा (Distrè)	21	84	04	16:
6.	आश्चर्य (Wonder)	24	96	01	04:
7.	आत्महीनता (Negation Self)	24	96	01	04:
8.	आत्म अभिमान (Positiva Self Feeling)	25	100	00	00:
9.	एकांकीपन (Lonlynè)	23	92	02	8:
10.	भूख (Hunger)	21	84	04	16:
11.	कृतिभान (Creativenè)	24	96	01	04:
12.	अमोद (Amusement)	22	88	03	12:

बधिर बालिकाओं द्वारा प्रदत्त प्रति उत्तर के द्वारा अपने संवेगात्मक समायोजन के आयामों की स्थिति को स्पष्ट किया गया है जिसका मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण विभिन्न सारणियों में निम्नलिखित है

सारणी संख्या 2: संवेगात्मक समायोजन के आयाम भय का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम भय नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रति उत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मनक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	25	22.96	1.338	0.268
योग	25	22.96	1.338	0.268

अधिकांश बधिर बालिकायें दूसरों से सहायता लेने एवं विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने हेतु समन्वय करने में संकोच या भय का भाव प्रकट करती हैं जिससे उनका संवेगात्मक समायोजन प्रभावित प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 3: संवेगात्मक समायोजन के आयाम क्रोध का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम क्रोध नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रति उत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	23	23.13	1.217	0.254
नहीं	02	21.00	1.414	1.000
योग	25	22.96	1.338	0.268

अधिकतर बधिर बालिकाऐं दूसरों से अपेक्षित व्यवहार प्राप्त न होने पर क्रोध या गुस्सा अथवा असहजता के भाव की अनुभूति करती हैं। जिससे उनका संवेगात्मक समायोजन निर्धारित प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 4: संवेगात्मक समायोजन के आयाम घृणा का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम घृण नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S. D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	21	23.33	1.065	0.232
नहीं	04	21.00	0.816	0.408
योग	25	22.96	1.338	0.268

अधिकांश बधिर बालिकायें अपने सहयोगियों या सहपाठियों द्वारा अच्छा प्रदर्शन करने पर या उपलब्धि पर ईर्श्या भाव की अनुभूति नहीं होती है। इससे उनका संवेगात्मक समायोजन सकारात्मक प्रभावित प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 5: संवेगात्मक समायोजन के आयाम वात्सल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम वात्सल्य नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	21	23.24	1.179	0.257
नहीं	04	21.50	1.291	0.645
योग	25	22.96	1.338	0.268

अधिकांश बधिर बालिकायें के प्रति प्रेम भाव, आकर्षण कार्यों को जानने की जिज्ञासा, कार्यों को करने की उत्सुकता, आदि जैसे संवेग की अनुभूति करती हैं। जिससे प्रकट होता है कि उनका संवेगात्मक समायोजन सकारात्मक रूप से प्रभावित प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 6: संवेगात्मक समायोजन के आयाम करूणा का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम करूणा नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रति उत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	21	23.33	1.065	0.232
नहीं	04	21.00	0.816	0.408
योग	25	22.96	1.338	0.268

बधिर बालिकाओं अपने सहयोगियों की परेशानी को देखकर विचलित या करूणा भाव का अनुभव करती हैं जिस कारण उनका संवेगात्मक समायोजन भी सकारात्मक रूप से प्रभावित होना प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 7: संवेगात्मक समायोजन के आयाम आश्चर्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम आश्चर्य नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	24	22.96	1.367	0.279
नहीं	01	23.00	NA	NA
योग	25	22.96	1.338	0.268

बधिर बालिकायें अपनी सामान्य सहपाठियों के प्रति आश्चर्य करती है इससे इनका संवेगात्मक समायोजन प्रभावित होता है।

सारणी संख्या 8: संवेगात्मक समायोजन के आयाम आत्महीनता का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम आत्महीनता नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	24	23.00	1.351	0.276
नहीं	01	22.00	NA	NA
योग	25	22.96	1.338	0.268

बधिर बालिकाओं का स्वयं में आत्महीनता या हीन भावना की अनुभूति करती है जिस कारण उनका संवेगात्मक समायोजन भी प्रभावित होता है।

सारणी संख्या 9: संवेगात्मक समायोजन के आयाम आत्मअभिमान का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम आत्मअभिमान नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	25	22.96	1.338	0.268
योग	25	22.96	1.338	0.268

अधिकतर बधिर बालिकायें इससे असहमत हैं और वे विषम परिस्थितियों में अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखकर एक सकारात्मक दिशा प्रदान करने की कोशिश करती है। इससे उनका संवेगात्मक समायोजन श्रेष्ठ रहता है। जिसका प्रभाव सकारात्मक रूप से उनके संवेगात्मक समायोजन पर पड़ता है।

सारणी संख्या 10: संवेगात्मक समायोजन के आयाम एकांकीपन का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम एकांकीपन नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	23	23.09	1.240	0.259
नहीं	02	21.50	2.121	1.500
योग	25	22.96	1.338	0.268

लगभग सभी बधिर बालिकायें एकांकीपन में रहना अधिक पसन्द करती हैं क्योंकि सामान्य सहपाठियों एवं अन्य लोगों के साथ वे स्वयं को समायोजित करने में कठिनाई की अनुभूति करती हैं। जिस कारण उनका संवेगात्मक समायोजन नकारात्मक रूप से प्रभावित प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 11: संवेगात्मक समायोजन के आयाम भूख का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम भूख नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	21	23.10	1.411	0.308
नहीं	04	22.25	0.500	0.250
योग	25	22.96	1.338	0.268

बधिर बालिकाओं के संवेगों में नकारात्मक परिवर्तन देखने को नहीं मिला इससे उनका संवेगात्मक समायोजन भी सकारात्मक प्रतीत होता है।

सारणी संख्या 12: संवेगात्मक समायोजन के आयाम सृजनात्मकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम सृजनात्मकता नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	23	23.09	1.240	0.259
नहीं	02	21.50	2.121	1.500
योग	25	22.96	1.338	0.268

लगभग सभी बधिर बालिकायें एकांकीपन में रहना अधिक पसन्द करती हैं क्योंकि सामान्य सहपाठियों एवं अन्य लोगों के साथ स्वयं को समायोजित कम कर पाती हैं जिस कारण इनका संवेगात्मक समायोजन करने में भी कठिनाई होती है।

सारणी संख्या 13: संवेगात्मक समायोजन के आयाम आमोद का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि का विवरण

आयाम आमोद नामक संवेग के सापेक्ष प्रयोज्यों द्वारा दिए प्रतिउत्तर	प्रयोज्यों की सं. N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	मध्यमान की मानक त्रुटि St. Error of Mean
हाँ	22	23.32	0.945	0.202
नहीं	3	20.33	0.577	0.333
योग	25	22.96	1.338	0.268

लगभग सभी बधिर बालिकाओं में आमोद की अनुभूति होती है इससे संवेगों में भी उतार–चढ़ाव आता है जिसके कारण उनका संवेगात्मक समायोजन भी किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है।

निष्कर्षतः अधिकांश बधिर बालिकाओं ने शिक्षकों द्वारा प्राप्त कार्य को करने में उत्सुकता का भाव एवं श्रेष्ठ उपलब्धि के प्रति किए गए कार्यों को जानने की जिज्ञासा का भाव व प्रेम का भाव होना, अपने शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति न होने पर हीनभावना, थकान की अनुभूति का भाव एवं आत्मग्लानि भाव महसूश करना, विषम परिस्थितियों में स्वयं के आत्माभिमान के साथ किसी प्रकार का समझौता न करना , सहभागिता के साथ भोजन करने की खुशी का भाव एवं भूख की अनुभूति होने पर भोजन को खोजने में शीघ्रता न करना, शैक्षिक कार्यों में सहपाठियों से सहायता लेना, एवं सहपाठियों के साथ शैक्षिक क्रिया–कलाप अथवा कार्यक्रम को समन्वय करने में कठिनाई की अनुभूति करना, कार्य करने की नवीन विधि से करने में खुशी का भाव एवं शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की श्रेष्ठ उपलब्धि पर खुशी का होना, एवं दूसरों की परेशानी को देखकर भावुक होना आदि संवेग या भाव देखने को मिले, इससे स्पष्ट है कि उनके संवेगात्मक समायोजन में सकारात्मक परिवर्तन होता प्रतीत होता है।

बधिर बालिकाओं ने दूसरों से सहायता लेने पर भय, संकोच एवं नवीन कार्यों को करने में कठिनाई, दूसरों के द्वारा अपेक्षित व्यवहार न होने पर असहजता का भाव, सहपाठियों द्वारा उपेक्षित व्यवहार करने पर क्रोध का भाव एवं नवीन सहपाठियों से घुलने–मिलने में भी असहजता का भाव, शैक्षिक प्रतिस्पर्धाओं में ईर्श्या का भाव करना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग की अपेक्षा एकांकीपन में रहना, शैक्षिक गतिविधियों के प्रति सक्रियता का भाव एवं सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग के प्रति विमुख भाव के प्रति नकारात्मक सहमति प्रकट की है जिससे उनका संवेगात्मक समायोजन में नकारात्मक प्रभाव प्रतीत होता है।

बधिर बालिकाओं के संवेगों को वांक्षित दिशा में मार्गान्तीकरण करने का प्रयास किया जाना चाहिये ताकि उनका संवेगात्मक समायोजन में होने वाली कठिनाइयों को कम किया जा सके। जब तक ऐसे बच्चों का उचित समायोजन नहीं होगा तब तक उनके सर्वांगीण विकास की बात नहीं की जा सकती है। इन बच्चों के संवेगात्मक समायोजन को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकताओं के वातावरण बनाने ध्यान रखना चाहिए। चाहे परिवार हो, विद्यालय हो, समाज हो। बधिर बालिकाओं के संवेगों को नकारात्मक रूप से प्रभावित होने से रोकने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे उनके संवेगात्मक समायोजन करने में

कठिनाइयों का सामना कम करना पड़े। बधिर बालिकाओं को शिक्षित कर उन्हें संवेगों से उभरने के लिए न केवल जागरूक करना चाहिए बल्कि ऐसी बालिकाओं के संवेगात्मक समायोजन नकारात्मक रूप बचने के लिए सामान्य विद्यालयों में विशेष शिक्षकों की सहायता से उनके लिए सुगम शैक्षिक वातावरण बनाना चाहिए और उनके व्यवसायिक पुनर्वास हेतु उचित वातावरण भी तैयार करना चाहिये।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता एस0पी0 (2017): सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।
2. दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम 2016 भारत सरकार नई दिल्ली
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 NCERT नई दिल्ली
4. गुप्ता, एस0पी0 (2017), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 224–225, 388–404।
5. ठाकुर, यतीन्द्र (2016), समावेशी शिक्षा, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पृ0 128–138।
6. पाल सीता राम, (2013), श्रवण एवं वाणी प्रबन्धन, नवीन प्रकाशन, अहमदाबाद, पृ0 01–18।
7. सिंह अरूण कुमार 2001 उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल वनारसीदास प्रकाशन प्रष्ठ संख्या 22,23,24
8. Journal of Educational Research. ISSN-1 Research in Audiology & Education University of Manchistan. 1987; 29:139.